तीव्र गति सँ चेला बनेनाई (RAD)
स्वस्थ मण्डली स्थापना करक पुस्तिका

अन्तिम संस्करण: June 2013

ई पृष्ठ जानि बुझि कऽ खाली छोड़ल गेल अछि।

तीव्र गति सँ चेला बनेनाई (RAD) by Wilson S. Geisler
Copyright © 2006-2013
Maithili Language Version

विषय-सूचि

स्वस्थ मण्डली स्थापना करक चरण सभ ४
स्वस्थ मण्डली स्थापना करक विभिन्न चरण सभ- चित्र ५
स्वस्थ मण्डली की अछि?..६
स्वस्थ मण्डली कैँ जाँच ७
शुभ-समाचार कोना सुनाबी (२-३-४) ८
पहिल चरण पाठ १- अपन उद्धार कैँ प्रति निश्चित होऊ.................................. ९
पहिल चरण पाठ २- बपतिस्मा लिय.. १०
पहिल चरण पाठ ३- जाऊ आ सुनाऊ... ११
पहिल मण्डली भेटघाट- भरोसा करु आ आज्ञापालन करु (अधिकार)............... १२
दोसर मण्डली भेटघाट- नया जीवन जीबू (आधार)...................................... १३
तेसर मण्डली भेटघाट- इजोत मे चलू (ठीक प्रकारक जीवन) १४
चारिम मण्डली भेटघाट- एक-दोसर कैँ प्रेम करु (ठीक प्रकारक सम्बन्ध)...... १५
पाँचम मण्डली भेटघाट- प्रभु मे मजबूत होऊ (ठीक प्रतिरोध)....................... १६
छठम मण्डली भेटघाट- उदार पूर्वक दियौ (मण्डली)................................... १७
सातम मण्डली भेटघाट- प्रभु-भोज लिय (मण्डली) १८
अगिला स्तर कैँ चेलापन निर्देशन १९
अगिला स्तर कैँ चेलापन धर्मशास्त्र कैँ खण्डसभ.. २०
परिशिष्ट क- अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ # १..२२
परिशिष्ट क- अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ # २..२३

स्वस्थ मण्डली स्थापना करक चरण सभ

१. मजदूरक लेल प्रार्थना करू (प्राय: शान्ति कें मनुष्य पहिल मजदूर होइत अछि) आ जतऽ यीशु पठबैत छथि ओहि गाँव वा शहर मे जाऊ। **(लूका १०:१-३)**

२. परमेश्वर पर भरोसा करू आ बाट मे व्यर्थ समय नहि बिताऊ। **(लूका १०:४)**

३. भरोसा करु जे अहाँ कें भेट करक लेल परमेश्वर शान्ति कें मनुष्य राखि देने छथि। **(मसीह-दूत १७:२६-२७)**

४. शान्ति कें मनुष्य पता लगाऊ, ओकर घर मे प्रवेश करु, आ ओ जे दैत अछि से खाऊ-पीबु (एके घर मे रहू आ घर-घर नहि घुमु।) **(लूका १०:५-८)**
नोट: जखन केओ पुछत जे अहाँ की करैत छी तऽ अहाँ कहि सकैत छी, "हम प्रभु यीशु मसीह चेला छी, आ एहि गाम मे परमेश्वरक आषिश देबक लेल आयल छी।"

५. आवश्यकता कें पूरा करु आ सुसमाचार सुनाऊ। **(लूका १०:९)**
(१-२-३ के प्रयोग कऽ कऽ सुसमाचार सुनाऊ जे ***पेज ८*** *मे पाओल जाइत अछि।)*

६. जखन कोनो एक आदमी यीशु विश्वास करैत अछि तऽ ओकर घरमे मण्डली शुरु करु आ जतेक जल्दी होय ओकरा यीशु कें पाछा चलक पहिल ३ चरण कें पाठ सिखाऊ।
- उद्धार कें निश्चयता **(पृष्ठ ९)**
- बपतिस्मा लिय **(पृष्ठ १०)**
- जाऊ आ सुनाऊ **(पृष्ठ ११)** - *स्थानिय विश्वासी सभ फसल कें मजदूर अछि!*

७. बपतिस्मा भेल विश्वासी सभ कें व्याख्या कऽ कऽ प्रभु-भोज दिय।

८. कम सँ कम सप्ताह मे एक बेर जा कऽ नव मण्डली कें स्वस्थ बनाबक लेल प्रभु मे आगा बढाऊ (चेलापन)। **(पौलुस कें ढाँचा प्रयोग करु)।**
क) पहिल मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १२)**
ख) दोसर मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १३)**
ग) तेसर मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १४)**
घ) चारिम मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १५)**
ङ) पाँचम मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १६)**
च) छठम मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १७)**
छ) सातम मण्डली भेटघाट सिखाऊ **(पृष्ठ १८)**

९. मण्डली अगिला चरण कें चेलापन शुरु करय आ मिलि कऽ सेवक-अगुवा कें नियुक्त करय। **(पृष्ठ १९-२१)**

१०. आज्ञाकारी विश्वासी सभक पता लगाऊ आ ओकरा सभ कें ई सभ सिखाऊ।

नोट:
- *जखन मण्डली वृद्धि होइत जायत, तऽ ई निश्चित करु जे केयो नव विश्वासी सभ कें पहिल चरण कें ३ पाठ आ पौलुसक ढाँचा कें ७ पाठ सिखाबय।*
- *एकबेर मे ६ सँ बेसी मण्डली स्थापना नहि करु। जाबत तक ओसभ स्वस्थ नहि होयत ताबत तक कम सँ कम सप्ताह मे एकबेर हरेक कें भेट केनाई जरुरी अछि। जँ अहाँ ६ टा मण्डली स्थापना केने छी तऽ एकर अर्थ जे ६ दिन काज आ १ दिन विश्राम। एकटा मण्डली स्वस्थ भेलाक बाद जाऊ आ नया ठाम मे दोसर मण्डली शुरु करु।*

स्वस्थ मण्डली स्थापना करक विभिन्न चरण सभ- चित्र

ई चित्र स्वस्थ मण्डली स्थापना कें चरण सभ कें याद करऽ मे सहायता करत। दोसर कें स्वस्थ मण्डली स्थापना कें बारे मे सिखबैत काल सेहो अहाँ ई चित्र बना सकैत छी जाहि सँ ओसभ एकर प्रकृया कें सिखऽ आ याद कऽ सकत।

(१०) आज्ञाकारी विश्वासी पता लगाऊ आ ओकरा ई सम्पूर्ण प्रकृया सिखाऊ जाहि सँ ओ औरो कें सिखा सकय।

(९) अगिला स्तर कें चेलापन शुरु करु आ अगुवा नियुक्त करु। (पेज १९-२१)

(८छ) प्रभु-भोज लिय (पेज १८)

(८च) उदार पूर्वक दियौ (पेज १७)

(८ङ) प्रभु मे मजबूत होऊ (पेज १६)

(८घ) एक-दोसर कें प्रेम करु (पेज १५)

(८ग) इजोत मे चलू (पेज १४)

(८ख) नया जीवन जीबू (पेज १३)

(८क) भरोसा आ आज्ञापालन करु (पेज १२)

(७) व्याख्या कऽ कऽ नया विश्वासी कें प्रभु-भोज देनाई शुरु करु।

(६) मण्डली शुरु करु/पहिल ३ पाठ सिखाऊ
(क) निश्चित होऊ (पेज ९)
(ख) बपतिस्मा लिय (पेज १०)
(ग) जाऊ आ सुनाऊ (पेज ११)

(५) आवश्यकता पूरा करु/शुभ-समाचार सुनाऊ (पेज ८)

(४) घर मे प्रवेश करु (पेज ४)

(३) परमेश्वर शान्ति कें व्यक्ति राखि देने छथि (पेज ४)

(२) परमेश्वर पर भरोसा करु (पेज ४)

(१) फसल कें मजदूर कें लेल प्रार्थना करु आ जाऊ (पेज ४)

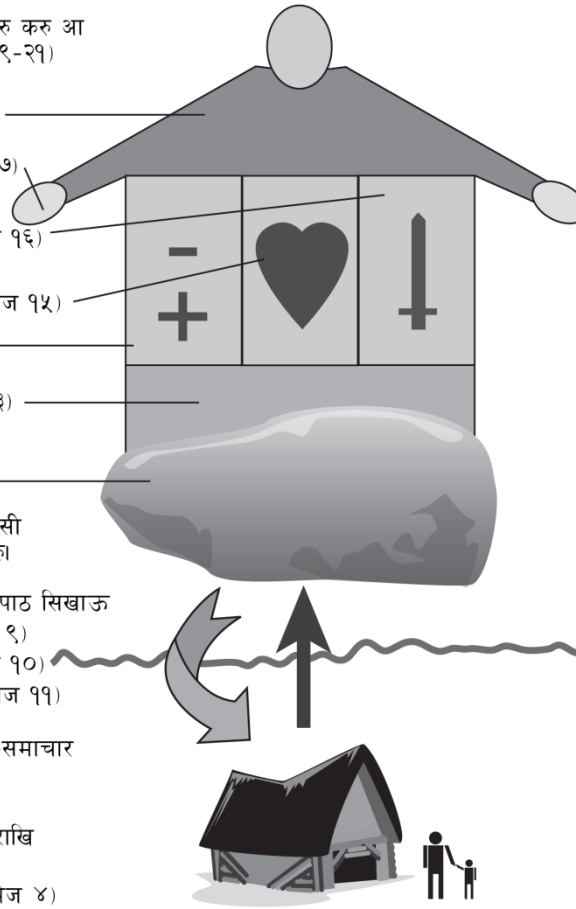

स्वस्थ मण्डली की अछि?

एकटा स्वस्थ मण्डली...

१. कैं एकैटा उद्देश्य होइत अछि।

क. सत्य परमेश्वर आ हुनकर महिमा प्रकट केनाई - **(हब २:१४)**

२. कैं अधिकार कैं २ टा श्रोत अछि।

क. प्रभु यीशु मसीह (परमेश्वर) - **(कल १:१८-१९)**

ख. परमेश्वरक वचन (बाइबल) - **(२ तिमु ३:१६-१७)**

३. कैं ३ प्रकारक अगुवा अछि।

क. जिम्मेवार व्यक्ति/चरबाह/मण्डली-सेवक - **(१तिमु ३:१-७)**

ख. सेवक-अगुवा - **(मसीह-दूत ६, १ तिमु ३:८-१३)**

ग. कोष सेवक - भरोसायोग्य सेवक-अगुवा जे दान कैं नीक जकाँ सम्हारि सकय।

४. कैं स्वास्थ्य कैं चारिटा चिन्ह होइत अछि। एकटा स्वस्थ मण्डली...

क. अपना आपके आर्थिक रुप सँ सहायता करबा मे सक्षम होइत अछि।

ख. कैं अपन अगुवा आ मण्डली कैं चलाबक अधिकार होइत अछि।

ग. जा कऽ औरो स्वस्थ मण्डली शुरु कऽ कऽ गुणात्मक करैत अछि।

घ. परमेश्वरक वचन प्रयोग कऽ कऽ अपना कैं आ एक दोसर कैं सुधार करैत अछि।

५. हुनकर महिमा कैं प्रकट करक लेल परमेश्वर द्वारा देल गेल ५ काज करैत अछि।

क. आराधना - परमेश्वर कैं प्रेम करु **(मत्ती २२:३६-३८)**

ख. सेवा - दोसर कैं प्रति प्रेम आ समर्पण करु **(मत्ती २२:३९, मसीह-दूत २:४२-४७)**

ग. संगति - एक दोसर कैं प्रेम करु **(मत्ती २२:३९, मसीह-दूत २:४२-४७)**

घ. शुभ-समाचार - जाऊ आ शुभ संदेश सुनाऊ **(मत्ती २८:१८-१९, मसीह-दूत २:४७)**

ङ. चेलापन - आज्ञापालन कैं लेल शिक्षा **(मत्ती २८:१९-२०, मसीह-दूत २:४२-४७)**

जखन अहाँ स्वस्थ मण्डली स्थापना कैं लेल ***पृष्ठ ४ आ ५*** *चरण कैं प्रयोग करब तऽ अहाँ कैं किछु चाही जाहि सँ जानि सकब जे ओ स्वस्थ अछि। मण्डली स्वस्थ होबऽ तक वैह घरमे रहक लक्ष्य भेलाक कारणेँ एकटा चित्र बना कऽ मण्डली कैं स्वस्थ आ वृद्धि अनुसार ओकरा भरक चाही। चित्र पूरा भेलाक बाद, मण्डली स्वस्थ आ गुणात्मक वृद्धि होयवला हेबाक चाही।*

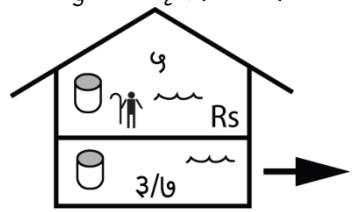

स्वस्थ मण्डली कँ जाँच

मण्डली कँ जाँचक लेल आ निश्चित करक लेल जे ओ स्वस्थ अछि निम्न चरण सभ अछि:

१. नया ठाम मे मण्डली स्थापना केलाक बाद (**पृष्ठ ४** मे चरण ६) अहाँ ओहि मण्डली कँ स्वास्थ जाँचनाई शुरु करब। खाली पन्ना पर निम्न चित्र कँ बनाऊ वा स्वस्थ मण्डली कँ जाँच वला पन्ना कँ प्रयोग करु। घर कँ नीचा मे गाम वा ठाम कँ नाम लिखू।

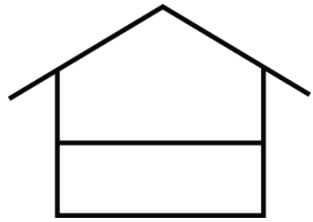

ठामक नाम

२. पहिल चरण कँ पाठ विश्वासी सभ कँ सिखेलाक बाद घर कँ निचका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ (**३/**)।

३. पहिल व्यक्ति कँ बपतिस्मा देलाक बाद, घरक निचला तल्ला पर ई चित्र बनाऊ ()।

४. बपतिस्मा लेल विश्वासी सभ कँ प्रभु-भोज देनाई शुरु केलाक बाद, घरक निचला तल्ला पर ई चित्र बनाऊ ( )।

५. नव मण्डली कँ पौलुसक ढाँचा सँ ७ पाठ सिखेलाक बाद, घरक निचला तल्ला पर ई चित्र बनाऊ (**७**)

६. मण्डली मे अगुवासभ नियुक्त भेलाक बाद, घरक उपरका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ ()।

७. मण्डली कँ सदस्य/अगुवा दोसर कँ बपतिस्मा देनाई शुरु केलाक बाद, घरक उपरका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ ( )।

८. मण्डली कँ सदस्य/अगुवा बपतिस्मा भेल औरो कँ प्रभु-भोज दोनाई शुरु केलाक बाद, घरक उपरका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ ( )।

९. मण्डली कोषाध्यक्ष कँ नियुक्ति भेलाक बाद आ ओसभ हरेक सप्ताह दशांश भेटी उठबैत अछि तऽ, घरक उपरका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ (**रू**)।

१०. मण्डली परमेश्वरक देल गेल स्वस्थ मण्डली कँ लेल ५ काज केनाई शुरु केलाक बाद, घरक उपरका तल्ला पर ई चित्र बनाऊ (**५**)।

११. मण्डली दोसर स्वस्थ मण्डली कँ विभिन्न ठाम मे शुरु केलाक बाद, मण्डली के बाहर ई चित्र बनाऊ ()।

शुभ-समाचार कोना सुनाबी (२-३-४)

परमेश्वर की चाहैत छथि? – २ पत्रुस ३:९, रोमी १०:१३-१५, लूका ८:३९

हमसभ कोना सुनाबी? - १ कोरि २:१-५, १ कोरि १:१७, १ थिस. २:१-८

हमसभ की सुनाबी? - २-३-४ प्रयोग कऽ कऽ शुभ-समाचार सुनाऊ।

२ - २ के अर्थ अछि जे शुभ-समाचार कें २ भाग होइत अछि - अहाँक आ यीशुक कथा।

३ - ३ के अर्थ अछि जे अहाँक कथा मे ३ भाग अछि:

- मसीह कें पाबऽ सँ पहिलुका जीवन
- मसीह सँ कोना भेट भेल
- मसीह कें पयलाक बादक जीवन

४ - ४ के अर्थ अछि जे यीशु कें कथा मे चारि भाग अछि

न्याय (रोमी २:१६, इब्रानी ९:२७, रोमी ३:२३, ६:२३)

पश्चाताप (मर्कुस १:१५, मसीह-दूत २:३७-३८, २ पत्रुस ३:९)

क्रूस पर मृत्यु (१ यूहन्ना २:१-२, रोमी ५:६,८, यूहन्ना ३:१६)

पुनरुत्थान (रोमी ६:२३, १ पत्रुस १:३-४, २ कोरि ५:१७)

ओकरा सभ कें पुछु जँ यीशु कें पाछा चलऽ आ उद्धार पाबऽ चाहैत अछि।

जँ ओसभ स्वीकार करऽ चाहैत अछि तऽ रोमी १०:९ प्रयोग करु आ ओकरा सभकें निम्न बात कहू:

(१) निश्चित रुप सँ ओसभ परमेश्वरक सामने अपन पाप सँ पश्चाताप करय।

(२) निश्चित रुप सँ ओसभ मात्र यीशु कें पाछा चलक समर्पण करय (यीशुए प्रभु छथि)

(३) निश्चित रुप सँ ओसभ अपन हृदय मे विश्वास करय जे यीशु मृत्यु सँ जीब उठलाह (ई जे यीशु ओकर सभक पापक लेल मरलाह आ नया जीवन मे जीब उठलाह ताकि ओसभ सेहो नया जीवन पाबय एखन आ अनन्त धरि)।

ओकरा सभ द्वारा यीशु कें स्वीकार केलाक बाद...

ओकरा सभ कें एकटा बाइबल दियौ **:** *पढ़ऽ वा सुनक लेल ओकरा सभ कें एकटा बाइबल दियौ।*

प्रतिदिन पढ़क लेल कहियौ :

ओकरा सभ कें कहू जे प्रत्येक दिन बाइबल मे सँ ३ अध्याय पढ़य वा सुनय आ ओसभ परमेश्वरक आज्ञा कें प्रति आज्ञाकारी होय।

पहिल चरण पाठ १- अपन उद्धार कें प्रति निश्चित होऊ

नोट: जतेक जल्दी होय नया विश्वासी कें पहिल चरण कें पाठसभ सिखाबक प्रयास करु। तीनू पाठ एके दिन मे (जाहि दिन ओसभ यीशु मसीह कें पाछा चलक निर्णय करैत अछि) सिखाओल जा सकैत अछि वा तीन अलग-अलग दिन मे। एकर लक्ष्य अछि जे ओसभ सिखय आ जतेक जल्दी होय धर्मशास्त्रक सत्यता कें प्रति आज्ञाकारी भऽ सकय।

प्रार्थना: प्रार्थना साथ विश्वासी सभक संग अपन समय कें शुरु करु। परमेश्वर कें धन्यवाद दिय जे ई व्यक्ति यीशु कें पाछा चलक निर्णय केलक आ उद्धार प्राप्त केलक।

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: एफिसी १:१३-१४, यूहन्ना १०:२७-३०, लूका ३:१५-१७

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

आज्ञा दियौ **:**

आब अहाँ मात्र यीशु कें पाछा चलक निर्णय केने छी, **अपन उद्धार कें प्रति निश्चित होऊ।** यीशु सर्वोच्च परमेश्वर छथि आ औरो कोनो ईश्वर सभ सँ बेसी शक्तिशाली छथि। केयोक अहाँ कें यीशु कें हाथ सँ नहि लऽ जा सकैत अछि। आ परमेश्वरक आत्मा (पवित्र आत्मा) अहाँक हृदय मे आयल छथि आ अहाँ पर उद्धारक छाप लगौने छथि। तें अहाँ आनन्द मनाऊ आ **अपन उद्धार कें लेल निश्चित होऊ !**

कहियौ **:**

संसार भरि मे हरेक व्यक्ति जे यीशु कें पाछा चलऽ चाहैत अछि तकरा सभक हृदय मे हमेशा कें लेल परमेश्वरक आत्मा देल गेल छैक। एहि कारणें, यीशु कें पाछा चलयवला सभ एक शरीर अछि आ ओ एकर शिर छथि। जखन लोकसभ यीशु कें पाछा चलैत अछि तऽ आराधना करक लेल निरन्तर भेटैत अछि आ परमेश्वर प्रति आज्ञाकारी होइत अछि, एकरा मण्डली कहैत अछि। एखन अहाँ मण्डली कें भाग छी, आ अहाँ औरो विश्वासी सभक संग निरन्तर भेटनाई शुरु करु।

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग पहिल चरण कें पाठ १ कें अन्त करु। हुनकर सुन्दर वरदान पवित्र आत्मा आ अनन्त जीवन कें लेल परमेश्वर कें धन्यवाद चढ़ाऊ।

पहिल चरण पाठ २- बपतिस्मा लिय

प्रार्थना: प्रार्थना साथ विश्वासी सभक संग अपन समय कें शुरु करु। परमेश्वर कें धन्यवाद दिय जे ई व्यक्ति पवित्र आत्मा पेलक आ निरन्तर यीशु कें पाछा चलक लेल तैयार अछि।

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: मसीह-दूत ८:२६-३९ आ मसीह-दूत २२:१६

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

आज्ञा दियौ :

अहाँ सिखलौं जे अहाँक उद्धार निश्चित अछि किएक तऽ परमेश्वर अहाँक हृदय मे अपन पवित्र आत्मा राखि देने छथि। परमेश्वर अहाँ कें पहिने सँ अपन पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा देने छथि, तें अहाँ शुद्ध छी। तैयो, वास्तव मे अहाँ यीशु कें पाछा चलैत छी से देखाबक लेल आ दोसर लोकसभ सेहो देख सकय जे ओ अहाँक प्रभु छथि, ओ अहाँ कें आज्ञा देने छथि जे अहाँ **पानि मे** बपतिस्मा लिय। अहाँ पहिने कहलौं जे यीशु कें पाछा चलब, तऽ अहाँ की करब? आई सिखलाक बाद अहाँ किएक देरी करब? एखने **बपतिस्मा लिय।**

गृहकार्य : जँ ओसभ **बपतिस्मा लेबक लेल** तैयार अछि तऽ जतेक जल्दी सम्भव होय बपतिस्मा दियौक (तुरन्त देनाई एकदम बाइबलीय अछि)। नोट: जँ एक सँ बेसी वा पूरा परिवार बपतिस्मा लेबक लेल तैयार छैक तऽ, अहाँ, मण्डली संस्थापक अपने सँ सभ कें बपतिस्मा नहि दियौक। बरु पौलुस कें उदाहरण अपनाऊ (१ कोरि १:१४-१७) आ स्थानिय विश्वासी नया विश्वासी कें बपतिस्मा दैक।

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग पहिल चरण कें पाठ २ कें अन्त करु। पानि कें बपतिस्मा कें लेल परमेश्वर कें धन्यवाद दियौक जे पवित्र आत्मा द्वारा हमर सभक बपतिस्मा कें परमेश्वरक चिन्ह अछि आ जाहि द्वारा हुनका प्रति हमसभ अपन भरोसा आ आज्ञाकारिता कें प्रदर्शन कऽ सकैत छी।

नोट: जँ कोनो व्यक्ति यीशु मसीह कें पाछा चलक समर्पणता कें रुप मे बपतिस्मा नहि लैत अछि तऽ ओकरा सँ फेर भेट करु आ एहि पुस्तिका के अन्त मे देल गेल बपतिस्मा कें बारे मे सहायक पाठ शुरु करु। **(परिशिष्ट क- पृष्ठ २२ आ २३)।**

पहिल चरण पाठ ३ - जाऊ आ सुनाऊ

प्रार्थना: प्रार्थना साथ विश्वासी सभक संग अपन समय कें शुरु करु। परमेश्वर कें धन्यवाद दिय जे हुनकर उद्धार हरेक जगह पर सभ लोकक लेल अछि।

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: मत्ती २८:१८-२०

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

२-३-४ सिखाऊ (शुभ-समाचार नीक संदेश अछि):

पृष्ठ ८ मेहक व्याख्या कें प्रयोग कऽ कऽ ओकरा सभ कें २-३-४ सिखाऊ। याद करु जे सिखेनाई सामान्य रुप सँ मात्र कहनाई सँ बढ़ि कऽ छैक, ओसभ निश्चित रुप सँ अभ्यास करैक। तें, २-३-४ कें व्याख्या केलाक बाद ओकरा सभ कें निम्न बात करऽ कहियौक:

१. **३ भाग कें अभ्यास:** जँ एक बेरमे एक सँ बेसी गोटे कें सिखबैत छी तऽ ओकरा सभ कें कहियौक जे एक-दोसर कें अपन कथा सुनाबय आ से सुनु। जँ अहाँ एक आदमी कें मात्र सिखबैत छी तऽ ओकरा कहियौक जे अपन कथा सुनाबय। ताबत तक अभ्यास करऽ कहियौक जाबत तक ओ दोसर कें आसानी सँ अपन कथा नहि सुना सकय। ई निश्चित करु जे ओ अपन कथा मे यीशु कें शुभ-समाचार सेहो कहैक।
२. **यीशु कें कथा कें ४ भागक अभ्यास:** ओकरा सभ कें कहियौक जे यीशु कें कथा मे प्रयोग कयल गेल हरेक बाइबल खण्ड कें पढ़ैक वा सुनैक। तखन एक-दोसर कें वा अहाँ कें यीशुक कथा सुनाबय जाबत तक दोसर कें आसानी सँ नहि सुना सकैक।

आज्ञा दियौ **:**

यीशुक आज्ञा मानु। **जाऊ आ** जकरा भेटैत छी तकरा सभ कें शुभ-समाचार **सुनाऊ** ताकि ओसभ सेहो परमेश्वरक मुफ्त वरदान, उद्धार पाबि सकय आ न्याय सँ बाँचि सकय।

गृहकार्य:

ओकरा सभ कें कहियौक जे ५ आदमी कें सूचि बनाबय जकरा ओसभ एहि सप्ताह शुभ-समाचार सुना सकय। कहियौक जे जहिया कहियो ओसभ मण्डली मे जमा होय तऽ एक-दोसर सँ हमेशा पुछय जे पिछला बेर भेटलाक बाद ककरा-ककरा शुभ-समाचार सुनेलक।

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग पहिल चरण कें पाठ २ कें अन्त करु। उद्धारक शुभ-समाचारक लेल परमेश्वर कें धन्यवाद दियौक आ २-३-४ सुनाबक लेल साहस मांगु।

पहिल मण्डली भेटघाट- भरोसा आ आज्ञापालन करु (अधिकार)

पौलुस कें ढाँचा पाठ १

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछु:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: मत्ती २८:१८-२०

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछु आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु २ तिमुथियुस ३:१६

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

प्रभु आ हुनकर वचन पर **भरोसा आ आज्ञापालन करु**

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल, जा कऽ शुभ-समाचार सुनाबक लेल आ जे सिखने अछि से अभ्यास करक लेल कहैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

दोसर मण्डली भेटघाट- नया जीवन जीबू (आधार)

पौलुस कें ढाँचा पाठ २

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: मत्ती ६:५-१५

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु कुलुस्सी १:१०

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

कार्य करु: अहाँ कें नया जीवन देल गेल अछि, तें नया जीवन जीबू। कोना? प्रत्येक दिन परमेश्वर कें वचन मे रहिकऽ, परमेश्वर सँ प्रार्थना आ प्रशंसा, परमेश्वरक लोक संग संगति कऽ कऽ, अपन आस-पासक लोक कें शुभ-समाचार सुनाकऽ, आ सेवा करऽ मे आ दुःख मे यीशु कें अपन उदाहरण बनाकऽ।

आज्ञा दियौ:

परमेश्वर मे ग्रहणयोग्य **नया जीवन जीबू** हरेक बातमे हुनका प्रसन्न करु।

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल, जे सिखने अछि से अभ्यास करक लेल कहैत आ गाममे जा कऽ जकरा चिन्हैत अछि वा भेटैत अछि तकरा शुभ-समाचार सुनाबक लेल याद दियबैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

तेसर मण्डली भेटघाट- इजोत मे चलू (ठीक प्रकारक जीवन)

पौलुस कें ढाँचा पाठ ३

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू:

हटाऊ: कलस्सी ३:५-१०

धारण करु: कलस्सी ३:१२-१४

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु: एफिसी ५:८

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

खराबी कें हटा कऽ नीक चीज कें धारण करु। **इजोत मे चलू!**

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल, जे सिखने अछि से अभ्यास करक लेल कहैत आ गाममे जा कऽ जकरा चिन्हैत अछि वा भेटैत अछि तकरा शुभ-समाचार सुनाबक लेल याद दियबैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

चारिम मण्डली भेटघाट- एक-दोसर कें प्रेम करु (ठीक प्रकारक सम्बन्ध)

पौलुस कें ढाँचा पाठ ४

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: कलस्सी ३:१४-४:६, १ पत्रुस २:१३-१४, एफिसी ५:२१-६:९

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु: एफिसी ५:२१

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

एक-दोसर कें **प्रेम करु** आ समर्पण करु।

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल, जे सिखने अछि से अभ्यास करक लेल कहैत आ गाममे जा कऽ जकरा चिन्हैत अछि वा भेटैत अछि तकरा शुभ-समाचार सुनाबक लेल याद दियबैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

पाँचम मण्डली भेटघाट- प्रभु मे मजबूत होऊ (ठीक प्रतिरोध)

पौलुस कें ढाँचा पाठ ५

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: एफिसी ६:१०-२०

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु: याकुब ४:७

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

प्रभु मे मजबूत होऊ आ परीक्षा कें विरोध करु

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल, जे सिखने अछि से अभ्यास करक लेल कहैत आ गाममे जा कऽ जकरा चिन्हैत अछि वा भेटैत अछि तकरा शुभ-समाचार सुनाबक लेल याद दियबैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

छठम मण्डली भेटघाट- उदार पूर्वक दियौ (मण्डली)

पौलुस कें ढाँचा पाठ ६

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कें शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कें गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कें विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: मसीह-दूत २:४२-४७

हरेक खण्ड कें लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कें उत्तर देबऽ दियौक।

१. ई अहाँ कें की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कें की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु: मत्ती ५:४२

ओहि खण्ड कें बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

उदार पूर्वक दियौ।

दशांश आ भेटी उठाऊ: *आई कें बाद ई मण्डलीक आराधना सेवाक नियमित भाग हेबाक चाही।*

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कें कथा कें ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कें यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल कहैत प्रार्थना सहित भेटघाट कें अन्त करु।

सातम मण्डली भेटघाट- प्रभु-भोज लिय (मण्डली)

पौलुस कँ ढाँचा पाठ ७

प्रार्थना: प्रार्थनाक संग भेटघाट कँ शुरुवात करु। अहाँ वा दोसर केओ प्रार्थना केलाक बाद दोसर चरण मे जाऊ।

प्रशंसा: प्रशंसा कँ गीत गाऊ आ परमेश्वरक आराधना करु।

जवाफदेही: जवाफदेही कें बारेमे ४ प्रश्न पुछू:

(१) पिछला बेर भेटलाक बाद अहाँ ककरा शुभ-समाचार सुनेलौं?

(२) की अहाँ हरेक दिन बाइबल पढ़लौं/सुनलौं?

(३) पिछला बेर जे सिखलौं तकर आज्ञापालन कोना केलौं?

(४) प्रार्थना कँ विषय/गवाही *(नोट: जँ केओ अपन समस्या के बारमे कहैत अछि तऽ तुरन्त ओकरा लेल प्रार्थना करु)*

नया शिक्षा:

(१) सहभागीमूलक बाइबल अध्ययन करु

पढ़ू वा सुनू: १ कोरिन्थी ११:२३-३४

हरेक खण्ड कँ लेल ४ अध्ययन प्रश्न पुछू आ ओकरा सभ कँ उत्तर देबऽ दियौक

१. ई अहाँ कँ की सिखबैत अछि?
२. अहाँ कँ की नहि करक चाही?
३. अहाँ कोना ठीक ठहरब?
४. अहाँ कोना आज्ञापालन करब?

(२) याद करु (कण्ठ करु)

याद करु: यूहन्ना ६:३५

ओहि खण्ड कँ बारेमे ४ अध्ययन प्रश्न पुछू।

आज्ञा दियौ:

अपना आपके जाँचू, **प्रभु-भोज लिय,** आ प्रभु कँ याद करु।

बपतिस्मा लेल विश्वासी सभकँ प्रभु-भोज दिय: *जँ ई नहि भऽ रहल अछि तऽ मण्डली अपने सँ आई कँ बाद संगति कँ नियमित भाग कँ रुप मे प्रभु-भोजा देनाई शुरु करय।*

दशांश आ भेटी उठाऊ:

शुभ-समाचार दियौ: यीशु कँ कथा कँ ४ भाग कहियौक

अन्तिम प्रार्थना: मण्डली कँ यीशु प्रति निरन्तर आज्ञाकारी रहक लेल कहैत प्रार्थना सहित भेटघाट कँ अन्त करु।.

अगिला स्तर कैं चेलापन निर्देशन

एखन अहाँ मण्डली कें पहिल चरण आ पौलुस कैं ढ़ाँचा दुनु सिखा चुकल छी, आब मण्डली स्वस्थ होबऽ लागक चाही। जँ अहाँ कैं याद अछि तऽ, मण्डली स्व-शासित होयबाक चाही जकर अर्थ अछि जे एहि मे ओ अगुवा सभ होयबाक चाही जकरा परमेश्वर अपन मण्डली कैं अगुवाई करक लेल बजौने छथि। भऽ सकैत अछि जे अहाँ आ स्थानिय मण्डली पहिने सँ किछु लोक कैं चिन्ह लेने छी जकरा परमेश्वर नियुक्त केने छथि, मुदा ई सम्भव अछि जे स्थानिय विश्वासी सभ कैं एखनो निरन्तर वृद्धि आ परिपक्व भेनाई आवाश्यक अछि। जाबत तक सम्भावित अगुवा सभ परिपक्व नहि होइत अछि आ परमेश्वरक वचन ठीक प्रकार सँ वर्णन नहि कऽ सकैत अछि ताबत तक मण्डली कैं अपना आपके सिखाबक चाही आ निरन्तर रुप सँ आराधना आ बाइबल अध्ययन कैं लेल भेटक चाही। अहाँ सेहो नियमित रुप सँ मण्डली मे जा कऽ देखू जे ओसभ एखनो प्रभु मे बढ़ि रहल अछि कि नहि। अन्त मे, ई याद करु जे आब स्थानिय विश्वासी ओकरा सभ कैं बपतिस्मा दैक जे मसीह कैं स्वीकार करैत अछि। जँ अहाँ अपने सभ कैं बपतिस्मा देब तऽ अहाँ स्वस्थ मण्डली नहि बना सकब। बपतिस्मा देबऽ वला व्यक्ति सम्भावित अगुवा वा साधारण विश्वासी भऽ सकैत अछि जे ओहि व्यक्ति कैं सुसमाचार सुनेलक। तें पौलुसक ढ़ाँचा कैं अन्तिम पाठक बाद, मण्डली कैं निर्देशन दियौक जे ओ निम्नलिखित करय:

- ओकरा सभ कें कहू जे निरन्तर भेटय आ मण्डली सेवा मे वैह ढ़ाँचा अपनाबय जे ओसभ करैत आबि रहल अछि।
- ओकरा सभ कैं कहू जे जखन ओसभ संगति मे नया शिक्षा कैं भाग मे आओत तऽ **पृष्ठ २० आ २१ मेहक** अगिला चरण कें धर्मशास्त्रीय खण्ड कें प्रयोग करय।
- ओकरा सभ कैं कहू जे ओसभ ककरो नियुक्त करय जे प्रभु-भोज निरन्तर भऽ रहल अछि कि नहि से निश्चित कऽ सकय।
- ओकरा सभ कैं कहू जे जँ ओसभ एखन तक नहि केने अछि तऽ, मण्डली कैं रुपमे जे यीशु कें स्वीकार करैत अछि तकरा सभकें बपतिस्मा दैक।
- ओकरा सभकैं कहू जे ओसभ दु गोटे भरोसायोग्य विश्वासी कैं भेटी उठाबक लेल नियुक्त करय, जे भेटी गनि कऽ सम्पूर्ण मण्डली के सुनाबय जे कतेक उठल।
- ओकरा सभ कैं कहू जे मण्डली परिवार कैं रुपमे परमेश्वर सँ पुछय आ सामुहिक रुप सँ निर्णय करय जे ओहि भेटी कैं कोना प्रयोग करी तकर बारेमे बाइबल की कहैत अछि। ओकरा सभकैं कहू जे जेना ई बाइबल मे प्रयोग भेल अछि तहिना प्रयोग होइक।

याद राखू जे अहाँक लक्ष्य ई अछि जे स्वस्थ गुणात्मक वृद्धि होयवला मण्डली स्थापना करी। एकर अर्थ जे अहाँ हमेशा आज्ञाकारी विश्वासी कें खोजी मे रहब जे खाली जमीन मे जाय आ फेर सँ नया मण्डली शुरु करय जकरा अहाँ ई सम्पूर्ण प्रकृया सिखा सकी। जहने अहाँ कोनो आज्ञकारी विश्वासी भेटैत छी तऽ ओकरा ओसभ चीज सिखाउ जे अहाँ सिखने छी।

अगिला स्तर कैं चेलापन धर्मशास्त्र कैं खण्डसभ

#	धर्मशास्त्रीय सन्दर्भ	कथा/विषय
१	लूका ५:१-११	माछ मारयवला/मसीह कें चेला
२	यूहन्ना १५:१-११	अंग्रलत्ती- आ ठाढ़ि/मसीह मे रहनाई
३	भजन-संग्रह ११९:१-१६	परमेश्वर कें पर मनन केनाई
४	लूका ११:१-१३ आ लूका १८:१-८	प्रार्थना
५	लूका १७:११-१९	कुष्ठरोगी चंगाई पेलक/आराधना
६	यूहन्ना ४:३-४२	सामरी स्त्री/आराधना
७	मत्ती ३:१-१७	बपतिस्मा देबवला यूहन्ना/पवित्र आत्मा
८	यूहन्ना १४:१६-१७; यूहन्ना १६:५-१५	पवित्र आत्मा कें भूमिका
९	उत्पति १-२	सृष्टि
१०	उत्पति	पाप
११	मसीह-दूत २:३७-४७	संगति
१२	कुलुस्सी १:१३-२३	यीशु
१३	फिलिप्पी २:३-११	सेवा/यीशु
१४	प्रस्थान २०:१-१७	१० आज्ञा
१५	१ कोरिन्थी १५:१-१९	यीशु कें पुनरुत्थान
१६	१ थिसलुनिकी ४:१३-५:११	हमर सभक पुनरुत्थान
१७	यूहन्ना १४:१-१५	स्वर्ग आ यीशु (परमेश्वर)
१८	लूका ७:३६-५०	क्षमादान
१९	लूका १०:२५-३७	महान आज्ञा
२०	मत्ती १८:२१-३५	दोसर कें क्षमा देनाई
२१	लूका ८:४-१५	शुभ-समाचार/बिया बाउग करयवला कें दृष्टान्त
२२	लूका १५	कृपा (अनुग्रह)
२३	लूका १७:१-१०	दोसर कें पापक कारण
२४	लूका १:२६-३८, लूका २:१-२०	यीशु कें जन्म
२५	एफिसी २:१-१०	धर्मीकरण (धर्मी ठहराओल)
२६	गलाती ५:१६-२१	आत्मा कें फल
२७	१ कोरिन्थी १२:१-१३	आत्मिक वरदान
२८	१ कोरिन्थी १२:१४-३१	एकता/मण्डली
२९	१ कोरिन्थी १३	प्रेम
३०	इब्रानी ११	भरोसा
३१	रोमी ४	विश्वास
३२	यूहन्ना १३:१-२०	सेवा
३३	मसीह-दूत ४:१-३१	शुभ-समाचार

अगिला स्तर कँ चेलापन धर्मशास्त्र कँ खण्डसभ -क्रमश:

३४	मत्ती २५:३१-४६	न्याय
३५	लूका १२:१५-३४	लालच/लोभ
३६	लूका १४:२५-३५	चेलापन/मूल्य चुकेनाई
३७	मर्कुस ७:१४-२३	भित्री शुद्धता
३८	१ राजा १८:२०-४०	मूर्तिसभ कमजोर
३९	मत्ती ५:२१-४८	सम्बन्ध
४०	मत्ती ६:१-२४	वास्तविक धर्म
४१	दानिएल ६	सतावट मे आज्ञाकारिता
४२	भजनसंग्रह २३	परमेश्वर सँ सान्त्वना
४३	मत्ती २४:४२-२५:१३	दोसर आगमन विश्वासी
४४	यूहन्ना ३:१-२१	नया जीवन
४५	यूहन्ना ५:१८-३०	यीशु परमेश्वर छथि/पुनारुत्थान
४६	लूका ८:२६-३९	भूतात्मा पर यीशुक शक्ति
४७	लूका ८:२२-२५	प्रकृति पर यीशुक शक्ति
४८	मत्ती १४:१३-२१	यीशु आवश्यकता पूरा करैत छथि
४९	मत्ती १४:२२-३६	यीशु आश्चर्यकर्म कऽ सकैत छथि
५०	मत्ती १६:१३-२८	यीशु कें छथि
५१	मसीह-दूत ५:१-११	परमेश्वर सँ झूठ नहि बाजू
५२	मसीह-दूत १७:१६-३४	एथेन्स मे पौलुस
५३	मसीह-दूत १९:११-२०	जँ अहाँ यीशु कें नहि जनैत छी
५४	१ तिमुथियस ३:१-१५	जिम्मेवार अगुवा आ मण्डली सेवक
५५	याकूब २:१-१३	दोसर सँ कोना व्यवहार करु
५६	याकूब ३:१-१२	जीह
५७	१ यूहन्ना १:५-२:६	पाप आ इजोत: अन्हार
५८	१ यूहन्ना ४	आत्मा कें जँचनाई/प्रेम
५९	प्रकाश २०:११-२१:८	अन्त कें समय
६०	१ थिसलुनिकी ४:१-१२	शुद्धिकरण

दीर्घकालीन चेलापन

१ तिमुथियस ३ अध्याय कँ गुण भेल अगुवा सभकँ मण्डली मे नियुक्त केलाक बादो एहन बहुतो चीज अछि जे दुनु अगुवा आ विश्वासी सभ कँ सिखक अछि। आज्ञाकारिता आ मसीह मे बढ़नाई जीवन भरि कँ प्रकृया अछि। RAD अगुवापन सामग्री निरन्तर बढ़ैत मण्डली कँ स्वास्थ आ वृद्धि कँ लेल अगुवा सभ कँ गुणात्मक वृद्धि आ विकास करबा मे अहाँ कँ सहायता करक लेल उपलब्ध अछि।

परिशिष्ट क- अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ # १

ई अध्ययन ओकरा सभक संग कयल जा सकैत अछि जे सभ आनन्द साथ शुभ-समाचार कें स्वीकार केलक मुदा बपतिस्मा कें बारेमे सिखलाक बादो बपतिस्मा लेबऽ नहि चाहैत अछि वा तैयार नहि अछि।

१. **पढ़ू आ विचार-विमर्श करु:** मत्ती १३:१-९ आ मत्ती १३:१८-२३
पुछु: अहाँ कोन प्रकारक जमीन (माटि) बनऽ चाहैत छी?

२. **पढ़ू आ विचार-विमर्श करु:** लूका १४:२५-३३, मत्ती १०:३२-३९, आ रोमी १०:९
मुख्य बिन्दु-
- यीशु सारा संसार कें उद्धार देबक लेल अयलाह।
- किछु लोक उद्धार प्राप्त नहि करत बरु यीशु कें पाछा चलक कारणें अहाँ कें सतावट देत।
- हमर सभक उद्धार मात्र यीशु मे विश्वास आ भरोसा राखक द्वारा भेलाक कारणें हुनका पहिल स्थान दऽ कऽ हमसभ देखबैत छी जे वास्तव मे ओ हमर सभक प्रभु छथि। हुनकर आज्ञा सभ सँ पहिने अयबाक चाही। एहि कारणें यीशु अपन चेला सभ कें मूल्यांकन करक लेल कहैत छथि।

पुछु: **की अहाँ यीशु कें आज्ञा पालन करब? ओ एकमात्र उद्धार कें रस्ता छथि। परमेशवर अहाँ कें चुनाव दैत छथि। की अहाँ यीशु कें पाछा चलब वा नहि?**

४. **पढ़ू आ विचार-विमर्श करु:** मत्ती २८:१८-२० आ मत्ती ३:१३-१७
पुछु:
- मत्ती २८:१८-२० मे यीशु हमरा सभ कें की करक लेल आज्ञा देने छथि? जँ हमसभ हुनकर चेला छी तऽ की हुनकर आज्ञा पालन करक चाही?
- मत्ती ३:१३-१७ मे यीशुक उदाहरण की छल? जँ हमसभ हुनकर चेला छि तऽ की हुनकर आज्ञा पालन करक चाही?

५. **पढ़ू आ विचार-विमर्श करु:** रोमी ६:३-८
मुख्य बिन्दु-
- पानि मे डुबनाई यीशु कें मृत्यु कें चिन्हित अछि। जेना यीशु हमर सभक पापक लेल मरलाह, अहाँक पापमय स्वभाव आ पुरान जीवन मरल अछि।
- पानि सँ बाहर निकलनाई यीशुक पुनरुत्थान कें चिन्हित करैत अछि। जेना यीशु नया जीवन मे जीबि उठलाह, तहिना जखन अहाँ विश्वास केलहुँ, यीशु द्वारा अहूँ कें नया जीवन देल गेल।

पुछु: आब अहाँ जनैत छी जे पानि कें बपतिस्मा कोन चीज कें चिन्हित करैत अछि आ ई यीशु मसीह कें आज्ञा आ उदाहरण अछि, तऽ की अहाँ बपतिस्मा लेब? पानि कें बपतिस्मा एहि बात कें प्रमाण अछि जे अहाँ वास्तव मे उद्धार पेने छी आ अहाँ बाँकी जीवन यीशु कें पाछा चलब। अहाँ की करब?

परिशिष्ट क- अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ # २

ई अध्ययन ओकरा सभक संग कयल जा सकैत अछि जे पहिल अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ कें सिखलाक बादो बपतिस्मा लेबक लेबऽ नहि चाहैत अछि वा तैयार नहि अछि।

पुछु: अहाँ आज्ञा पालन करऽ सँ पहिने कतेक बेर बाइबल मे यीशु मसीहक आज्ञा वा उदाहरण कें देखऽ चाहैत छी? (आशा करैत छी जे उत्तर होयत, मात्र एकबेर)।

पढ़ू आ विचार-विमर्श करु: मसीह-दूत पुस्तक मे सँ निम्न खण्ड सभ। हरेक खण्ड पढ़लाक बाद निम्न प्रश्न पुछु:

(१) नया विश्वासीसभ कहिया पानि कें बपतिस्मा लैत छैक?

(२) के सभ बपतिस्मा लेलक? (लोकक संख्या, लिङ्ग, ओकर सभक पहिलुका जीवन कें चुनाव आ एखुनका अवस्था पर ध्यान दियौक)।

(३) सभ खण्ड पर विचार-विमर्श भेलाक बाद, वैह प्रश्न पुछि कऽ अन्त करु जे हननिया पौलुस कें मसीह-दूत २२:१६ मे पूछलनि जे, "अहाँ किएक देरी करैत छी?"

बाइबल खण्ड	बपतिस्मा लेल व्यक्तिसभ
मसीह-दूत २:४१	एकदिन मे ३०००
मसीह-दूत ८:६-१३	भूतात्मा लागल/जादूगर/बिमार
मसीह-दूत ८:३६-३८	रस्ता चलैत हाकिम
मसीह-दूत ९:१८-१९	मसीही सभ कें हत्या करयवला आ सताबयवला
मसीह-दूत १०:४७-४८	अन्यजाति (गैर यहूदी)
मसीह-दूत १६:१३-१५	नदी किनारक स्त्री
मसीह-दूत १६:३३	रोमी सिपाही
मसीह-दूत १८:८	धार्मिक अगुवा (सभाघर, मन्दिर कें पुजारी)
मसीह-दूत १९:१-५	यीशु कें नाम मे नहि भऽ औरो नाम मे बपतिस्मा भेल लोकसभ
मसीह-दूत २२:१४-१७	मसीही सभक हत्या करयवला *"अहाँ किएक देरी करैत छी?"*

जीवन कें गाछ सँ लेल गेल- अनुमति सहित प्रयोग कयल गेल

परमेश्वरक राज्य वृद्धि कें चारि प्रकारक जमनी
मर्कूस ४:२६-२९

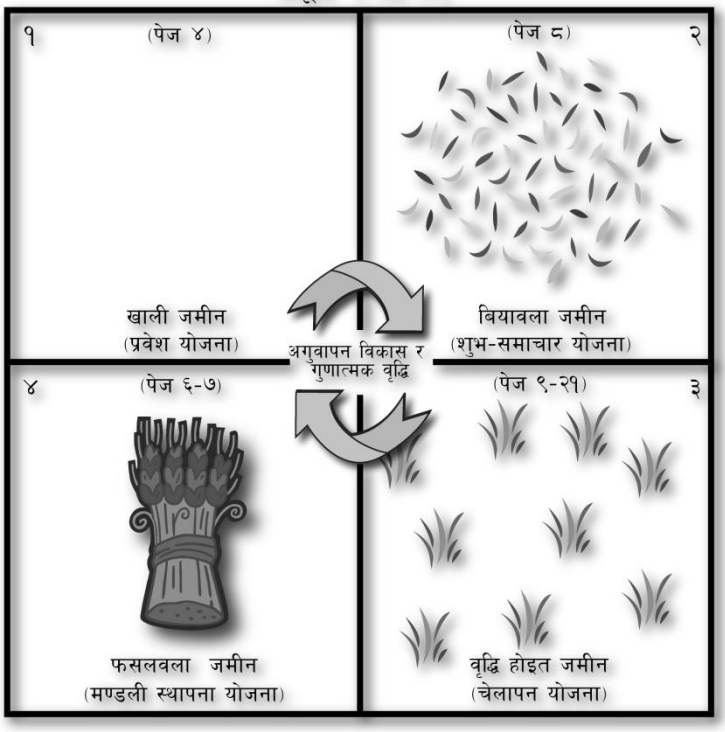

जाऊ आ सुनाऊ सूचि

१. _____ ७. _____

२. _____ ८. _____

३. _____ ९. _____

४. _____ १०. _____

५. _____ ११. _____

६. _____ १२. _____